हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
वर्ष 5, अंक 41, 18 पेज, मूल्य 3.00 रुपए, फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया, वि.सं. 2070
मंगलवार, 18 फरवरी 2014, बरेली, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर
www.livehindustan.com

गुजरात के मानसिक अस्पताल से छूटकर आया बरेली का सुनील

20 वर्ष बाद 'मसीहा' ने पहुंचाया घर

बरेली | वरिष्ठ संवाददाता

20 वर्ष से लापता बरेली का नौजवान सुनील लौट आया है। बताया जा रहा है कि उसकी मानसिक हालत खराब होने पर वह आला हजरत एक्सप्रेस में बैठकर भुज (गुजरात) पहुंच गया। बरेली के ही शैलेश (एनजीओ के मनोवैज्ञानिक) ने उसकी वापसी में अहम भूमिका निभाई। पहली बार में तो यहां कोई नहीं मिला पर दूसरी बार में सुनील के फूफा-बुआ से भेंट हो गई। सुनील घर तो आ गया है पर यहां उसके पिता की मौत हो चुकी है और उसका मकान भी बिक गया है। अब यहां उसका कोई नहीं है। पीलीभीत में रह रहे फूफा-बुआ ने उसे शरण दी है।

सुनील का परिवार कभी कुतुबखाना के पास एक की तंग गली में रहता था। पता था मकान नंबर-181, बजरिया पूरनमल। मां बचपन में ही गुजर गई थी। पिता दामोदर प्रसाद और भाई छोटेलाल। पहले वह जगत टाकीज में चाय-समोसा बेचता था मगर बाद में उसकी मानसिक हालत गड़बड़ हो गई तो एक दिन वह लापता हो गया। आशंका है कि वह तब आला हजरत एक्सप्रेस से भुज पहुंच गया और अब 20 वर्ष बाद मुंबई के श्रद्धा फाउंडेशन के मनोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा (निवासी बरेली) की मदद से उसकी वापसी हो पाई है। शैलेश ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि छह माह

सुनील के घर लौटने पर उसके बुआ-फूफा का खुशी का ठिकाना न रहा।

पहले वह भुज अस्पताल गए थे तो वहां सुनील ने खुद को बरेली का बताया तो उसे लेकर यहां आए मगर उसका घर नहीं मिला। छह जनवरी 2014 को श्रद्धा फाउंडेशन ने सुनील को भुज के मानसिक अस्पताल से रिलीज करा लिया।

काम आया टाकीज का स्टाफ

शैलेश पहली बार सुनील को ले आए तो किसी ने उसे नहीं पहचाना। इस कारण शैलेश उसे लेकर मुंबई लौट गए। वहां सुनील की हालत और बेहतर हुई तो उसने बताया कि वह कुतुबखाने के पास एक टाकीज की कैंटीन में काम करता था। शैलेश उसे लेकर फिर बरेली आए। जगत टाकीज पर जगदीश चाटवाले ने सुनील को पहचान लिया। जगदीश के साथ सभी बजरिया पूरनमल में सुनील के घर (मकान नंबर 181) पहुंचे। कुछ ही देर में पता चला कि यह घर सुनील का नहीं रहा। यह बेचा जा चुका है।

इस कहानी में छिपे दर्द ही दर्द

बेटे के इंतजार में तीन वर्ष पहले सुनील के पिता दामोदर चल बसे। वे लीचीबाग की एक ट्रांसपोर्ट कंपनी में चौकीदार थे। मां का निधन तो बचपन में ही हो गया था। पड़ोसियों ने बताया कि सुनील के छोटे भाई छोटेलाल की भी 18 साल पहले पीलिया से मौत हो गई। फिर किसी ने सुनील की नन्हीं बुआ का जिक्र किया। वही बुआ जिन्होंने मां की मौत के बाद वर्षों तक सुनील की परवरिश की थी। वह अपने परिवार (पति नत्थू लाल चंचल) के साथ पीलीभीत में रहती हैं। इस पर शैलेश 15 फरवरी को पीलीभीत गए।

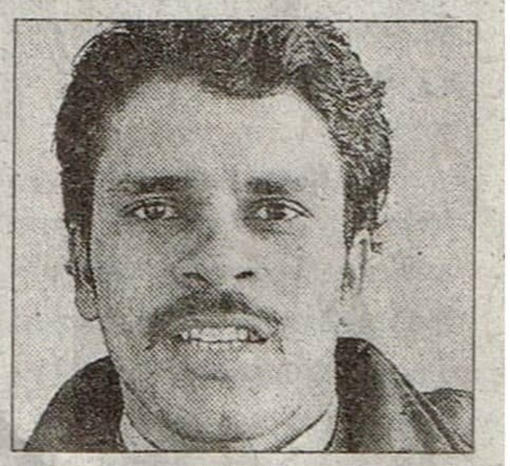

शैलेश कुमार, मनोवैज्ञानिक

घर लौटने की खुशी

फूफा-बुआ ने सुनील को देखा तो एकबारगी विश्वास ही नहीं हुआ। श्रीवास्तव परिवार का चिराग जो लौट आया था। 45 साल के हो चुके सुनील को बच्चों की तरह लाड़ दिया जा रहा था। बुआ को तो सुनील में ही अपना भाई दिखने लगा था।

ऐसे मामले बरेली मानसिक अस्पताल में भी

श्रद्धा फाउंडेशन ऐसे ही लोगों को मानसिक अस्पतालों से घर पहुंचाने काम करती है। शैलेश बताते हैं, मानसिक अस्पतालों में तमाम ऐसे मरीज भर्ती हैं, जिन्हें घर भेजा जा सकता है। बरेली के मानसिक अस्पताल में भी ऐसे कई मरीज भर्ती बताए जाते हैं। मैंने अस्पताल प्रबंधन से ऐसे मरीजों की जिम्मेदारी दिए जाने की बात की है।